International Journal of Education and Science Research Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org April- 2018, Volume-5, Issue-2 Email- editor@ijesrr.org

किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध

Dr. Shweta Sharma
Lecturer
Department of Home
C.C.S. University Campus,
Meerut (U.P.), India

Dr. Kamlesh Sharma
Retd. Prof.
Dr. B. S. Ambedkar Institute of Social Science
Mahu, Indore (M.P.), India

सार–
बुद्धि का अभिप्राय ''व्यक्ति की समस्या समाधान एवं नई परिस्थितियों में प्रभावशाली अनुक्रिया करने की योग्यता आदि से हैं।'' मनुष्य आज श्रेष्ठतम प्राणी मानसिक योग्यता के कारण ही समझा जाता है। मनुष्य में बुद्धि जन्मजात होती है किन्तु परिश्रम, लगन, ज्ञान की लगन और अनुशासन के बल पर कमजोर बुद्धि वाला बालक भी प्रखर बुद्धि का बन सकता है। अतः कहा जा सकता है कि बुद्धि वंशानुगत है परन्तु उपयुक्त वातावरण से उसमें विकास भी संभव है। प्रस्तुत अध्ययन, किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु किया गया। अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत इन्दौर शहर के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत इकलौते, प्रथम एवं अन्तिम जन्मक्रम वाले 500 किशोरों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन में सोद्देश्य निदर्शन विधि द्वारा समग्र का चुनाव किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु पी0 एन0 मेहरोत्रा द्वारा निर्मित, ''बुद्धि का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण'' एवं प्रश्नावली को प्रयुक्त किया गया। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में परिणामस्वरुप इकलौते एवं अन्तिम जन्मक्रम वाले किशोरों की अपेक्षा प्रथम जन्मक्रम वाले किशोर अधिक बुद्धि लब्धि वाले पाये गये।

प्रस्तावना–
''मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है।'' बुद्धिमान प्राणी होने के नाते ही वह अन्य प्राणियों से पृथक और श्रेष्ठ समझा जाता है। बुद्धि कोई ठोस वस्तु नहीं है। वस्तुतः यह व्यक्ति के व्यवहार, कार्य करने की विधि समस्या को सुलझाने की क्षमता के रुप में प्रदर्शित होने वालो योग्यता है। व्यक्ति जब किसी समस्या का समाधान सफलतापूर्वक कर लेता है, तब हम कहते हैं कि उसने बुद्धि का परिचय दिया है, परन्तु जब वह समस्याओं का सामना नहीं कर पाता तो हम उस मूर्ख कहते हैं। अर्थात् बुद्धि से तात्पर्य है सीखने की योग्यता तथा पूर्व ज्ञान का सही वातावरण के साथ समायोजन तथा समस्याओं को सुलझाने में उपयोग करना। अच्छी बुद्धि वही है जो शीघ्र एवं सरलता से अपने आपको अभियोजित कर ले। बुद्धि को प्रत्यक्ष रुप से नहीं देखा जा सकता बल्कि उसके प्रभावों को देखा जा सकता है, अतः कहा जा सकता है कि बुद्धि एक परिकल्पनात्मक शक्ति है। बुद्धि का उपयोग व्यक्ति बहुधा विभिन्न समस्याओं को समझने और उनका अधिगम करने में तो करता ही है, परन्तु बुद्धि का उपयोग जीव अपने दैनिक जीवन की छोटी–छोटी बातों से लेकर बड़ी–बड़ी बातों को समझने एवं उनके प्रति अनुक्रिया करने में भी करता है। इसके विषय में मैग्डूगल कहते हैं कि–''जहाँ प्रकृति मूल प्रवृत्तियों द्वारा वातावरण की समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ होती है वहाँ बुद्धि तत्व का उदय होता है।''

सिरिल बर्ट के अनुसार, ''बुद्धि शब्द का उद्गम, Intelligence शब्द सिसेरो द्वारा प्रचलित Intelligentea से उत्पन्न हुआ है। मनोविज्ञान में बुद्धि शब्द का प्रयोग हरबर्ट स्पेन्सर द्वारा प्रारम्भ किया गया। उनका विश्वास था कि आन्तरिक और बाह्य सम्बन्धों में निरन्तर होने वाला समायोजन है। मनुष्य में यह समायोजन बुद्धि की शक्ति के द्वारा तथा पशुओं में यह मूलवृत्तियों के द्वारा प्राप्त किया जाता है। बुद्धि का इतना महत्व है परन्तु बुद्धि क्या है, इस सम्बन्ध में सभी मनोवैज्ञानिकों का एक मत नहीं है। मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को अपने–अपने ढ़ंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। F. S. Freeman ने बुद्धि की परिभाषाओं को निम्न 4 वर्गों में विभाजित किया है–

1. बुद्धि : एक अभियोजन–योग्यता : इस वर्ग की परिभाषाओं के अनुसार अभियोजन की योग्यता को बुद्धि कहते हैं। अभियोजन का अर्थ वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा बाह्य वातावरण के बीच सन्तुलन स्थापित करता है। अतः जो व्यक्ति इस अभियोजन–प्रक्रिया में अधिकसफल होता है, उसमें बुद्धि अधिक होती है एवं जो व्यक्ति इसमें कम सफल होता है, उसमें बुद्धि कम होती है। स्पष्ट है कि इस वर्ग की परिभाषाओं के अनुसार अभियोजन ही बुद्धि का मापदण्ड है। इस सम्बन्ध में कई मनोवैज्ञानिकों को परिभाषायें निम्न हैं :–

- स्टर्न (1914) के अनुसार–''नई परिस्थितियों में समायोजन की योग्यता ही बुद्धि है।''

- मन (1955) के अनुसार–''गतिशील अभियोजन की क्षमता ही बुद्धि है।''
- पिण्टर (1944) के शब्दों में–''जीवन में नई परिस्थितियों में अपने आपको समुचित रुप से अभियोजन की योग्यता को ही बुद्धि कहते हैं।

2. बुद्धि : सीखने की योग्यता : इस वर्ग की परिभाषाओं के अनुसार सीखने की योग्यता ही बुद्धि है। इस वर्ग को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों में, एबिंग हौस, बकिंग्हम, गोडार्ड, मॉर्गन तथा किंग, फ्रायड, डियर बौर्न आदि का नाम प्रमुख है। जो व्यक्ति किसी विषय को जल्दी सीख लेता है, उसकी बुद्धि अधिक होती है। इसी तरह विश्वास किया जाता है कि जो व्यक्ति जटिल विषय को सीखने में सफलत होता है, उसकी बुद्धि अधिक होती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति देर से सीखता है या जटिल विषय नहीं सीख पाता, उसे मन्द बुद्धि कहा जाता है। इस विचार के समर्थक मनोवैज्ञानिकों की परिभाषायें निम्न हैं :–

- एबिंगहौस (1897) के अनुसार–''सीखने अथवा पूर्व अनुभव से लाभान्वित होने की योग्यता ही बुद्धि है।
- गोडार्ड (1942) के अनुसार–''तात्कालिक समस्याओं के समाधान तथा भविष्य के पूर्वाभास हेतु अपने अनुभव की उपलब्धि की मात्रा ही बुद्धि है।''
- बकिंग्हम के अनुसार–''सीखने की योग्यता ही बुद्धि है।''

3. बुद्धि : चिन्तन की योग्यता : इस वर्ग को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों में टर्मन, स्पीयरमैन गैरेट, बिनेट आदि का नाम प्रमुख है। इनके अनुसार चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है। विश्वास किया जाता है कि तेज बुद्धि का व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान जल्दी करता है। यह भी विश्वास किया जाता है कि जिस व्यक्ति में अमूर्त चिंतन की योग्यता अधिक होती है वह अधिक बुद्धिमान होता है तथा जिस व्यक्ति में अमूर्त चिन्तन की योग्यता कम होती है, उसमें कम बुद्धि होती है। इस पक्ष के अन्तर्गत निम्न परिभाषायें आती है–

- टर्मन (1921) के अनुसार–''अमूर्त चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है।''
- गैरेट के अनुसार–''समस्याओं के समाधान, जिसमें परिज्ञान तथा प्रतीक की आवश्यकता होती है, की योग्यता ही बुद्धि है।''
- बिनेट के अनुसार–''किसी समस्या को समझना, उसके विषय में तर्क करना तथा किसी निश्चित निर्णय पर पहुंचना बुद्धि की आवश्यक क्रियायें हैं।''

4. बुद्धि :एम समग्र योग्यता : इस वर्ग की परिभाषाओं के अनुसार बुद्धि एक समग्र योग्यता है, जो व्यक्ति को भिन्न–भिन्न रुपों में मदद करती है। यही योग्यता व्यक्ति को कभी सीखने में, याद करने में, चिन्तन करने में और कभी अभियोजन करने में सहायता करती है। जिस प्रकार एक ही विद्युत धारा कहीं प्रकाश के रुप में, कहीं हवा के रुप में, कहीं आग के रुप में नजर आती है, इसी प्रकार बुद्धि कहीं शिक्षण के रुप में, कहीं स्मरण के रुप में, कहीं चिन्तन के रुप में, और कहीं अभियोजन के रुप में व्यक्ति की सहायता करती है। इस वर्ग के मनोवैज्ञानिकों की कुछ परिभाषायें निम्न ह

- वेश्लर (1944) के शब्दों में–''बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र क्षमता है, जो उसे उद्देश्यपूर्ण कार्य, विवेकपूर्ण चिन्तन तथा प्रभावपूर्ण अभियोजन में सहायता करतीहै।''
- कगन तथा हेवमैन (1974) के अनुसार–''पूर्व अनुभव से लाभ उठाने, नई सूचना सीखने तथा नयी परिस्थिति में अभियोजन स्थापित करने की योग्यता ही बुद्धि है।''
- स्टोडर्ड (1956) के शब्दों में–''बुद्धि वह योग्यता है, जो ऐसी क्रियाओं को करने में सहायक होती है, जिनमें कठिनाई, जटिलता, अमूर्तता, मितव्यय, लक्ष्य के प्रति अनुकूलता, सामाजिक मूल्य तथा मौलिकताओं के उभार की विशेषतायें होती हैं।''

उर्पयुक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि बुद्धि एक प्रकार की योग्यता तथा योग्यताओं का संयोगीकरण है, जिसे व्यक्ति विवेकशील तथा अमूर्त चिन्तन कर सकता है, ध्येयपूर्ण क्रियायें कर सकता है, ज्ञान और संकेतों से युक्त अधिगम कर सकता है तथा नयी परिस्थितियों से प्रभाव पूर्ण समायोजन कर सकता है। जब हम किसी व्यक्ति को

होनहार, चतुर, निपुण या समझदार कहते हैं, तो इस प्रकार कह कर हम उस व्यक्ति की बुद्धि के किसी न किसी पक्ष को व्यक्त करते हैं।

बुद्धि को मुख्यतः आनुवांशिक माना जाता है। बुद्धि का आधार जीन है। इसी जीन के माध्यम से माता–पिता से बौद्धिक योग्यतायें बालकों तक पहुंचती है। वह वंशागत योग्यता बीज रुप में जन्म के समय बालक में उपस्थित रहती है। बालक की आयु या परिपक्वता में वृद्धि के साथ–साथ यह योग्यता भी विकसित होती जाती है। यह बात सत्य है कि बुद्धि तथा अनुवांशिकता के बीच एक बड़ी सीमा तक सम्बन्ध पाया जाता है परन्तु बुद्धि पर जननिक कारक के साथ–साथ वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ऐसा माना जाता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर, व्यक्तिगत अनुभव, माता–पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय, परिवार का प्रकार आदि के साथ–साथ जन्मक्रम का भी प्रभाव बुद्धि पर पड़ता है। बेलमोन्ट एवं मरोला (1993), फर्नहेम, रिव्स ईमा एवं बुधानी (2002) के अनुसार जिन बालकों का जन्मक्रम में प्रथम स्थान होता है, उनकी बुद्धि लब्धि जन्मक्रम में द्वितीय स्थान वाले बालकों की अपेक्षा अधिक होती है, क्योंकि प्रथम सन्तान पर सभी परिवार के सदस्य अन्य की अपेक्षा अधिक ध्यान देते हैं व अधिक सुविधायें तथा अवसर प्रदान करते हैं।

शोध विधि–

अध्ययन का उद्देश्य : किशारों की बुद्धि लब्धि का उनके जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
अध्ययन की परिकल्पना : किशोरों की बुद्धि लब्धि का उनके जन्मक्रम के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।
अध्ययन का समग्र : प्रस्तुत अध्ययन में, समग्र के अन्तर्गत इन्दौर शहर के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत, इकलौते, प्रथम व अन्तिम जन्मक्रम वाले 500 (13–16 वर्ष) किशोरों को सम्मिलित किया गया।
निदर्शन पद्धति : प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत निदर्श के चुनाव हेतु सोद्देश्य निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया।
उपकरण : प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु पी0 एन0 मेहरोत्रा द्वारा निर्मित 'बुद्धि का मिश्रित प्रकार का सामूहिक परीक्षण', एवं प्रश्नावली को उपकरण के रुप में प्रयुक्त किया गया।
सांख्यिकीय विश्लेषण : अध्ययन में आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण को प्रयुक्त किया गया।

अध्ययन की सीमायें : प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित सीमायें निर्धारित की गई–

1. अध्ययन में केवल इन्दौर शहर के 13–16 वर्ष की आयु वर्ग के किशोरों को सम्मिलित किया गया।
2. अध्ययन में केवल इकलौते, प्रथम एवं अन्तिम जन्मक्रम वाले किशोरों को सम्मिलित किया गया।
3. अध्ययन में केवल शालेय किशोरों को सम्मिलित किया गया।
4. अध्ययन में केवल मनोवैज्ञानिक बुद्धि परीक्षण एवं प्रश्नावली को प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण–

सारणी–1

किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध

श्रेणियाँ		जन्मक्रम			सार्थकता स्तर
		इकलौता	प्रथम	अन्तिम	
बुद्धि लब्धि	निम्न	10	48	78	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	42	73	117	
	उच्च	9	82	41	

काई–वर्ग मूल्य = 43.918, मुक्तांश = 4

उक्त सारणी क्रमांक–1 किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके जन्मक्रम के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। सारणी से स्पष्ट होता है कि निम्न बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 10 किशोर इकलौते, 48 किशोर प्रथम जन्मक्रम तथा 78 किशोर अन्तिम जन्मक्रम के पाये गये। मध्यम बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 42 किशोर इकलौते, 73 किशोर प्रथम जन्मक्रम के तथा 117 किशोर अन्तिम जन्मक्रम वाले पाये गये। उच्च बुद्धि लब्धि के अन्तर्गत 9 किशोर इकलौते, 82 किशोर प्रथम जन्मक्रम वाले एवं 41 किशोर अन्तिम जन्मक्रम वाले पाये गये। सांख्यिकीय गणना में, 4 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 43.918 पाया गया, जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके

जन्मक्रम के मध्यम सम्बन्ध हैं। अन्य शब्दों में, इकलौते एवं अन्तिम जन्मक्रम वाले किशोरों की अपेक्षा प्रथम जन्मक्रम वाले किशोर अधिक बुद्धि लब्धि वाले होते हैं।

पूर्व में किये गये अध्ययनों में, बिल्किस एवं उमा देवी (1999) ने बुद्धि एवं जन्मक्रम के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया। इसके विपरीत फर्नहेम, रिव्स एवं बुधानी (2002) ने प्रथम जन्मक्रम वाले किशोरों को अधिक बुद्धि लब्धि वाला पाया। प्रस्तुत अध्ययन फर्नहेम, रिव्स एवं बुधानी (2002) के शोध अध्ययन की पुष्टि करता है।

संदर्भ सूची–

1. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव डी0 एन0 (1979), ''बाल मनोविज्ञान : बाल विकास'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0 337।
2. पारीक, मरेश्वर (1994), ''बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध'', रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ0 115।
3. शर्मा, कमलेश ; शर्मा, ललिता एवं उपाध्याय, पुष्पा (नवीन परिवर्धित संस्करण) ''एडवान्स बाल विकास'', स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0 198।
4. सुलैमान, मुहम्मद (2003), ''सामान्य मनोविज्ञान'', शुक्ला बुक डिपो, पटना, पृ0 24, 200, 347–351।
5. Cooper, Colin (1999), "Intelligence & Abilities", Routledge, London & New York, p. 25-26.
6. Bilques & L., Uma Devi (1999), "Intellectual Abilities of Rural Adolescents", Psycho-Lingua, 29, 137-140.
7. Furnham, Adrian ; Reeves, Emma & Budhani Salima (2002), "Parents think their sons are brighter than their daughters : Sex differences in parental self – estimations & estimations of their children's multiple Intelligence" , Journal of Genetic Psychology, Vol. 163 (1), 24-39.